॥ॐ॥

।।ॐ श्री परमात्मने नमः।।

॥श्री गणेशाय नमः॥

ब्रह्मणस्पतिसूक्त

विषय-सूची

ब्रह्मणस्पतिसूक्त 3

ब्रह्मणस्पतिसूक्त

ऋग्वेद १। ४०

ऋग्वेद के प्रथम मण्डलका ४०वाँ सूक्त'ब्रह्मणस्पतिसूक्त' कहलाता है, इसके ऋषि कण्व घोर' हैं। वैदिक देवता विघ्नेश गणपति 'ब्रह्मणस्पति' भी कहलाते हैं। प्राचीन वेदभाष्यकार श्रीस्कन्दस्वामी (वि०सं० ६८७) अपने ऋग्वेदभाष्य में लिखते हैं-

विघ्नेश विधिमार्तण्डचन्द्रेन्द्रोपेन्द्रवन्दित। नमो गणपते तुभ्यं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पते

अर्थात् ब्रह्मा, सूर्य, चन्द्र, इन्द्र तथा विष्णुके द्वारा वन्दित हे विघ्नेश गणपति! मन्त्रोंके स्वामी ब्रह्मणस्पति ! आपको नमस्कार है। |

मुद्गलपुराण में भी स्पष्ट लिखा है-

सिद्धिबुद्धिपतिं वन्दे ब्रह्मणस्पतिसंज्ञितम् । माङ्गल्येशं सर्वपूज्यं विघ्नानां नायकं परम् ॥

अर्थात् समस्त मंगलोंके स्वामी, सभीके परम पूज्य, सकल विघ्नोंके परम नायक, 'ब्रह्मणस्पति नामसे प्रसिद्ध सिद्धि-बुद्धिके पति (गणपति)-की मैं वन्दना करता हूँ।

'ब्रह्मणस्पति के रूपमें वे ही सर्वज्ञाननिधि तथा समस्त वाङ्मयके अधिष्ठाता हैं।

उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे।
उप प्र यन्तु मरुत सुदानव इन्द्र प्राशूर्भवा सचा ॥१॥

हे ज्ञान के स्वामी ! उठिये, हम देवत्व पाने की इच्छा करते हुए आपकी प्रार्थना करते हैं। उत्तम दानी मरुत् वीर साथ-साथ रहकर यहाँ आ जायें। हे इन्द्र! सबके साथ रहकर इस सोमरस का पान कीजिये ॥१॥

त्वामिद्धि सहसस्पुत्र मयं उपजूते धने हिते।
सुवीर्य मरुत आ स्वश्व्यं दधीत यो व आचके ॥२॥

हे बल के लिये उत्पन्न होने वाले वीर! मनुष्य युद्ध छिड़ जाने पर आपको ही सहायतार्थ बुलाता है। हे मरुतो ! जो तुम्हारे गुण गाता है, उसे उत्तम घोड़ों से युक्त और उत्तम वीरता युक्त धन प्राप्त होता है ॥२॥

प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः प्र देव्येतु सूनृता।
अच्छा वीरं नर्यं पङ्क्तिराधसं देवा यज्ञं नयन्तु नः ॥३॥

ज्ञानी ब्रह्मणस्पति हमारे पास पधारें, सत्यरूपिणी देवी भी पधारें । सब देव मनुष्यों के लिये हितकारी, पंक्ति में सम्मान योग्य, उत्तम यज्ञ करने वाले वीर को हमारे पास ले आयें ॥३॥

यो वाघते ददाति सूनरं वसु स धत्ते अक्षिति श्रवः।
तस्मा इळां सुवीरामा यजामहे सुप्रतूर्तिमनेहसम्॥४॥

जो यज्ञकर्ता को उत्तम धन देता है, उसे अक्षय यश प्राप्त होता है। उसके हितार्थ हम उत्तम वीरों से युक्त, शत्रु का हनन करने वाली, अपराजित मातृभूमि की प्रार्थना करते हैं। ॥४॥

प्र नूनं ब्रह्मणस्पतिर्मन्त्रं वदत्युक्थ्यम्।
यस्मिन्निन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा देवा ओकांसि चक्रिरे ॥५॥

ब्रह्मणस्पति उस पवित्र मन्त्र का अवश्य ही उच्चारण करते हैं, जिनमें इन्द्र, वरुण, मित्र, अर्यमा आदि देवों ने अपने घर बनाये हैं ॥५॥

तमिद् वोचेमा विदथेषु शंभुवं मन्त्रं देवा अनेहसम् ।
इमां च वाचं प्रतिहर्यथा नरो विश्वेद् वामा वो अश्नवत् ॥६॥

हे देवों ! उस सुखदायी अविनाशी मन्त्र का उच्चारण हम यज्ञ में करते हैं। हे नेतागण ! इस मन्त्र रुपी वाणी की यदि प्रशंसा करोगे तो आपको सभी सुख प्राप्त होंगे। ॥ ६॥

को देवयन्तमश्नवज्ज जनं को वृक्तबर्हिषम्।
प्रप्र दाश्वान् पस्त्याभिरस्थिताऽन्तर्वावत् क्षयं दधे ॥७॥

देवत्व की इच्छा रखने वाले मनुष्य के पास ब्रह्मणस्पति को छोड़कर और कौन आयेगा? आसन फैला कर उपासना करने वाले उपासक के पास और कौन आयेगा? दाता अपनी प्रजा के साथ वैसे ही प्रगति करता है जैसे संतान वाले घर की शरण लेते हैं ॥७॥

उप क्षत्रं पृञ्चीत हन्ति राजभिर्भये चित् सुक्षितिं दधे।
नास्य वर्ता न तरुता महाधने नार्थे अस्ति वज्रिणः ॥८॥

ब्रह्मणस्पति क्षात्रबल का संचय करते है, राजाओं की सहायता से वह शत्रुओं का विनाश करते हैं, महान भय के भी उपस्थित होने पर वह उत्तम धैर्य को धारण करते हैं। इन वज्रधारी के साथ होने वाले बड़े युद्ध या छोटे में इनका निवारण करनेवाला और पराजित करनेवाला कोई नहीं है ॥८॥

संकलनकर्ता:

श्री मनीष त्यागी

संस्थापक एवं अध्यक्ष

श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन

www.shdvef.com

।।ॐ नमो भगवते वासुदेवाय:।।